

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রীকুমার বরদাচার্যেণ কৃতম্
॥শ্রীদেশিকমঙ্গলম্ ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीदेशिकमङ्गलम् ॥

श्रीमान् रेक्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधन्तां सदा हृदि ॥

श्रीमल्लङ्गण योगीन्द्र सिद्धान्त रिजयधरजम।
विश्वामित्र कुलोद्भूतं वरदार्यमहं भजे ॥

सर्वतन्त्र स्वतन्त्राय सिंहाय करिवादिनाम्।
वेदान्ताचार्य वर्याय रेक्कटेशाय मङ्गलम् ॥ १ ॥

नभस्यमासि शोणायाम् अरतीर्णाय सूरये।
विश्वामित्रान्वयायास्तु रेक्कटेशाय मङ्गलम् ॥ २ ॥

पिता यस्यानन्तसूरिः पुण्डरीकान्क यज्वनः।
पौत्रो यस्तनयस्तोतारन्वायास्तस्य मङ्गलम् ॥ ३ ॥

रेक्कटेशारतारोयं तद्वर्णटांशोथरा भवेत्।
यतीन्द्रांशोथरेत्येवं वितर्क्यायास्तु मङ्गलम् ॥ ४ ॥

श्रीभाष्यकारः पञ्चानम् आत्मना दर्शितं पुनः।
उक्ततूर्मागतो नूनम् इत्यूक्त्यास्तु मङ्गलम् ॥ ५ ॥

यो बाल्ये वरदार्यस्य प्राचार्यस्य परां दयाम्।
अराप्य बुद्धिं गमितः तस्मै योग्याय मङ्गलम् ॥ ६ ॥

रामानुजार्यादात्रेयात् मातुलात् सकलाः कलाः।
अराप रिंशत्येदे यः तस्मै प्राञ्जय मङ्गलम् ॥ ७ ॥

श्रुतप्रकाशिका भूमौ येनादौ परिरम्भिता।
प्रवर्तिता च पात्रेषु तस्मै श्रेष्ठाय मङ्गलम् ॥ ८ ॥

सांस्कृतीभिर्दामिडीभिः वहीभिः कृतिभिर्जनान्।
यससमुज्जीरयामास तस्मै सेव्याय मङ्गलम् ॥ ९ ॥

যঃ খ্যাতি লাভ পূজাসু বিমুখো বৈষ্ণৱে জনে।
ক্রয়ণীয় দশাং প্রাপ্তঃ তস্মৈ ভর্যায় মঙ্গলম্ ॥ ১০ ॥

যস্মাদেব মযা সৰ্বং শাস্ত্রমগ্রাহি নান্যতঃ।
তস্মৈ রেক্টনাথায় মম নাথায় মঙ্গলম্ ॥ ১১ ॥

পিত্রে ব্রহ্মোপদেষ্টে মে গুরৱে দৈৱতায় চ।
প্রাপ্যায় প্রাপকায়াস্তু রেক্টেশায় মঙ্গলম্ ॥ ১২ ॥

যঃ কৃতং বরদার্যেণ বেদান্তাচার্য মঙ্গলম্।
আশাস্তেনুদিনং সোপি ভৱেন্ মঙ্গল ভাজনম্ ॥ ১৩ ॥

সপ্ততি রত্ন মালিকা

ভদ্রপদমাসগত বিষ্ণুবিমলক্ষে
রেক্টমহীধ্রুপতি তীর্থদিনভূতে।
প্রাদুরভবজ্জগতি দৈত্য রিপুঘণ্টা
হন্ত করিতার্কিক মৃগেন্দ্র গুরুমূর্ত্যা ॥

সশঙ্খচক্রলানছনঃ সদূর্ধ্বরপুঞ্জমণ্ডিতঃ
সকণ্ঠলগ্নসত্তুলস্যনর্ঘ্য পদ্মমালিকঃ।
সিতান্তরীয সূত্ররীয যজ্ঞসূত্র শোভিতঃ
মমারিরস্তু মানসে গুরুঃ স রেক্টেশ্বরঃ ॥

অনন্ত সূরি সূনৱেভিনন্দ্যমান বৈভৱাদ
দিগন্ত ৱাদিহংস জৈত্রকালমেঘ দেশিকাত্।
উপাত্ত সর্বশাসনায় হন্ত বর্ষ ঝিংশতো
পুনঃপুনর্নমস্ক্রিয়াস্তু রেক্টেশ সূরযে ॥

করিতার্কিক কলভব্রজ কবলীকৃতিসিংহং
কমলাপতি করুণারস পরিবর্ধিত বোধম্।
যতিনায়ক পদপঙ্কজ যুগলী পরতন্ত্রং
ভজ মানস বুধরেক্টপতিদেশিকমনিশম্ ॥

কলযে সততং করুণা জলধিং
করুণা বিষয়ং কমলাধিপতেঃ।

কলি বৈরি শঠারি রচো রসিকং
কবিতার্কিক কেসরি সূরি গুরুম্ ॥

গুরো বাদিহংসাম্বুদাচাযশিষ্যে
জনা ভক্তিহীনা যতীন্দ্রাপ্রিয়াঃ সূঃ ।
যতীন্দ্রাপ্রিয়া ঝিষু কারুণ্যদূরাঃ
কুতো মুক্তিবার্তা হি তাদৃগ্বিধানাম্ ॥

বেদে সঞ্জাত খেদে মুনিজন রচনে প্রাপ্তনিত্যরমানে
সংকীর্ণে সর্বর্ণে সতি তদনুগুণে নিষ্প্রমাণে পুরাণে ।
মাযারাদে সমোদে কলিকলুষ বশাচ্ছূন্যরাদেবিবাদে
ধর্মত্রাণায় যোভূত্ স জযতি ভগবান্ ঝিষু ঘণ্টারতারঃ ॥

॥ ইতি শ্রীদেশিকমঙ্গলম্ সমাপ্তম্ ॥

কবিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে ।
শ্রীমতে বেক্ষটেশায় বেদান্তগুরবে নমঃ ॥

বাদিদ্ভিপশিরোভঙ্গপথগননপরাক্রমঃ ।
শ্রীমান্ বেক্ষটনাথার্যঃ চিরং বিজযতাং ভুরি ॥